कृषि बाजार में मूल्य नियंत्रण

कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 127–130

कृषि बाजार में मूल्य नियंत्रण: सकारात्मक और नकारात्मक पहल

हर्षित मिश्रा[1], डॉ. सुप्रिया[2] एवं श्रीपति द्विवेदी[3]

[1]शोध छात्र, [2]सहायक प्राध्यापक, कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या (उ०प्र०)
[3]शोध छात्र, कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर, बिहार, भारत।

Email Id: wehars@gmail.com

1. प्रस्तावना:

कृषि, भारतीय अर्थव्यवस्था का मौलिक हिस्सा है और देश के अन्यान्य क्षेत्रों के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। यह बड़े हिस्से में लोगों का रोजगार प्रदान करता है और जीवन्तिकता की जरूरियातों को पूरा करने के लिए मुख्य आपूर्ति स्रोत है। हालांकि, कृषि सेक्टर की समस्याओं के बावजूद, उसका सुधारना महत्वपूर्ण है, ताकि यह विकास की दिशा में सामर्थ्य रख सके। कृषि बाजार में मूल्य नियंत्रण एक ऐसा पहल है जिसका मुख्य उद्देश्य कृषि उत्पादों के मूल्यों को स्थिर रखना है, ताकि किसानों को न्यायसंगत मूल्य मिल सके और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके। इस पहल के तहत, हम दो प्रमुख पहलों के बारे में विचार करेंगे – सकारात्मक और नकारात्मक मूल्य नियंत्रण।

सकारात्मक मूल्य नियंत्रण का मुख्य उद्देश्य है किसानों को सुरक्षितता और न्यायसंगत मूल्य प्रदान करना है। इसके तहत, सरकार किसानों को मनोरंजन की कीमतों से बचाते हैं और किसानों को उनके उत्पादों के लिए न्यायसंगत मूल्य देते हैं। सकारात्मक मूल्य नियंत्रण के माध्यम से, सरकार किसानों को आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास करती है। विपरीत, नकारात्मक मूल्य नियंत्रण का उद्देश्य बाजार की स्वतंत्रता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना है। इसके तहत, सरकार किसानों के और विभिन्न बाजार प्रक्रियाओं के बीच अंतर को कम करने का प्रयास करती है और बाजार को अपने नियमों के अनुसार स्वतंत्रता से काम करने देती है। नकारात्मक मूल्य नियंत्रण के माध्यम से, सरकार बाजार को प्रतिस्पर्धा की बढ़ती ताकत देने का प्रयास करती है, जिससे कृषि उत्पादों का उत्पादन बढ़ सके और उनका गुणवत्ता सुधार सके। इस प्रस्तावना के बाद, हम इस विशेषज्ञता के दो प्रमुख पहलों के परिणामस्वरूप आने वाले प्रभावों का अध्ययन करेंगे, ताकि हम समझ सकें कि सकारात्मक और नकारात्मक मूल्य नियंत्रण के माध्यम से कृषि सेक्टर को कैसे सुधारा जा सकता है।

2. सकारात्मक मूल्य नियंत्रण:

कृषि बाजार में मूल्य नियंत्रण का मतलब

सकारात्मक मूल्य नियंत्रण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सरकार किसानों के खेती के उत्पादों की मूल्यों पर नियंत्रण लगाती है, ताकि उन्हें उचित मूल्य मिल सके और खाद्य सुरक्षा की दिशा में योगदान किया जा सके।

सकारात्मक मूल्य नियंत्रण के फायदे:

- किसानों को मिलने वाले लाभ: सकारात्मक मूल्य नियंत्रण के अंतर्गत, सरकार किसानों को उनके उत्पादों के लिए न्यूनतम सहायता मूल्य गारंटी कर सकती है,

जिससे किसानों को उचित मूल्य मिल सकता है और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है।

- महंगाई के खिलाफ सुरक्षाः सकारात्मक मूल्य नियंत्रण से, किसानों को अधिक खेती की महंगाई के खिलाफ सुरक्षा मिलती है। यह उन्हें उचित मूल्य प्राप्त करने में मदद करता है और उनकी आर्थिक चिंताओं को कम करता है।
- खाद्य सुरक्षा के प्रति योगदानः सकारात्मक मूल्य नियंत्रण से, सरकार खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने में मदद कर सकती है। इसके माध्यम से, खाद्य उत्पादों की उपलब्धता और मूल्यों को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे लोगों को उचित और सस्ता खाद्य उपलब्ध होता है।

इस तरह, सकारात्मक मूल्य नियंत्रण कृषि सेक्टर में स्थायीता और सामाजिक सुरक्षा को सुनिश्चित करने में मदद कर सकता है और विभिन्न सामाजिक और आर्थिक प्रश्नों का समाधान प्रदान कर सकता है।

3. नकारात्मक मूल्य नियंत्रण

नकारात्मक मूल्य नियंत्रण का मतलब

नकारात्मक मूल्य नियंत्रण, जिसे विपरीत रूप से नियंत्रित मूल्य या मूल्य स्थिरीकरण भी कहा जाता है, एक विशिष्ट कृषि उत्पाद के लिए बाजार मूल्यों को स्थिर रखने का प्रयास होता है। इसका मुख्य उद्देश्य किसानों को न्यायसंगत मूल्य प्राप्त करने में मदद करना है, ताकि उन्हें उनके उत्पादों के लिए स्थिर और सुरक्षित आय प्राप्त हो सके।

नकारात्मक मूल्य नियंत्रण के प्रति चुनौतियां

- **बाजार स्वतंत्रता पर प्रतिबंधः** नकारात्मक मूल्य नियंत्रण का प्रमुख संकट यह है कि यह बाजार की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित कर सकता है। जब सरकार उत्पादों के मूल्यों को नियंत्रित करती है, तो यह व्यापारिक निवेश को कम कर सकता है, क्योंकि लोग निवेश के लिए अकर्षक मान सकते हैं।
- **निवेश के लिए अकर्षकः** नकारात्मक मूल्य नियंत्रण के बजाय, स्वतंत्र बाजारों में निवेश करने के लिए बड़ी प्रेरणा मिल सकती है। इसका मतलब है कि निवेशक अपना पूंजी उत्पादन के साथ ज्यादा उत्कृष्ट रूप से वित्तपोषण कर सकते हैं, जो किसानों के लिए स्थिर मूल्यों की गारंटी के साथ नहीं होता।
- **समृद्धि और नौकरियों के अवसरों की कमीः** नकारात्मक मूल्य नियंत्रण के प्रयास ने किसानों के लिए स्थिरता प्रदान करने की कोशिश की है, लेकिन यह स्वरूप में नौकरियों और समृद्धि के अवसरों को कम कर सकता है। क्योंकि यह बाजार को स्थिरता से बाधित करता है, तो व्यापारों और उद्योगों के लिए नौकरी और समृद्धि के अवसरों की कमी हो सकती है।

नकारात्मक मूल्य नियंत्रण का प्रयोजन किसानों की मदद करना है, लेकिन इसके प्रति चुनौतियां भी हैं जो सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं पर उनका प्रभाव डाल सकती हैं।

4. सकारात्मक और नकारात्मक मूल्य नियंत्रण की तुलना

4.1 किन स्थितियों में किस प्रकार का मूल्य नियंत्रण उपयुक्त है

कृषि बाजार में मूल्य नियंत्रण की चर्चा करते समय, पहले और फोरमों के साथ एक महत्वपूर्ण तरीका होता है कि किन स्थितियों में मूल्य नियंत्रण का उपयोग किया जा सकता है।

- **उपादान अत्यधिकताः** जब किसानों द्वारा उत्पादित माल का उपादान अत्यधिक होता है और बाजार में उपयोगकर्ताओं की मांग कम होती है, तो मूल्य नियंत्रण उपयुक्त हो सकता है। इससे किसानों को उचित मूल्य मिल सकता है और उनका आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकता है।

- **मौसम आपदाएं और अन्य आकस्मिक घटनाएं**: प्राकृतिक आपदाएं और अन्य आकस्मिक घटनाएं जैसे कि बाढ़, सूखा, या पूर्वानुमान से अलग मौसम शर्तें किसानों को नुकसान पहुंचा सकती हैं। इन स्थितियों में मूल्य नियंत्रण किसानों की सहायता कर सकता है ताकि उन्हें न्यूनतम आर्थिक हानि हो।
- **मूल्य के विपरीत संविदानिक संरचना**: कुछ देशों में, कृषि मूल्यों को संविदानिक तौर पर नियंत्रित किया जा सकता है। यह ऐसे स्थितियों में उपयुक्त हो सकता है जब किसानों की हितों की संरक्षा के लिए सरकार की नीतियों का पालन किया जाता है।

4.2 सकारात्मक और नकारात्मक मूल्य नियंत्रण की योजना

सकारात्मक मूल्य नियंत्रण की योजना:

सकारात्मक मूल्य नियंत्रण की योजना के तहत सरकार किसानों को उचित मूल्य देने के लिए एक मूल्य बंद करती है। इसमें किसानों को एक न्यूनतम मूल्य की गारंटी दी जाती है, जिससे उन्हें न्यूनतम सामर्थ्य स्तर की आर्थिक सुरक्षा मिलती है।

नकारात्मक मूल्य नियंत्रण की योजना:

नकारात्मक मूल्य नियंत्रण की योजना के तहत सरकार बाजार में मूल्यों को नियंत्रित करती है ताकि उपयोगकर्ताओं को उचित मूल्य पर माल और सेवाएं मिल सकें। इससे उपयोगकर्ताओं को सस्ते मूल्यों पर माल और सेवाएं मिलती हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती ह

5. कैसे बदल सकता है कृषि बाजार में मूल्य नियंत्रण

कृषि बाजार में मूल्य नियंत्रण कैसे बदल सकता है, इसके लिए निम्नलिखित कुछ प्रमुख उपाय हैं:

5.1 सरकार की नीतियां और कदम:

- **मूल्य स्थिरता की नीतियां**: सरकार किसानों और उपभोक्ताओं के हित में मूल्यों को स्थिर करने के लिए नीतियां बना सकती है। यह मूल्य वोलेटिलिटी को कम कर सकता है और किसानों को सुरक्षितता प्रदान कर सकता है।
- **सब्सिडी**: सरकार किसानों को खेती की लागत कम करने के लिए सब्सिडी प्रदान कर सकती है, जिससे मूल्यों को कम किया जा सकता है।
- **आपूर्ति और मांग का प्रबंधन**: सरकार आपूर्ति और मांग को संतुलित रखने के लिए कदम उठा सकती है, ताकि अधिशेष खेती उत्पाद या भूख की स्थितियों से बचा जा सके।

5.2 किसानों और उद्यमियों के योगदान:

- **किसानों का शिक्षा और प्रशिक्षण**: किसानों को नवाचारी खेती तकनीकों का प्रशिक्षण देने से उनकी उत्पादकता बढ़ सकती है और मूल्यों को कम कर सकती है।
- **किसानों का साकारात्मक रूप से बाजार में पहुंचना**: किसानों को सीधे बाजारों और उपभोक्ताओं के साथ संवाद करने का मौका देना और बाजारों में सीधे बेचने के उपायों का समर्थन करना मूल्यों को कम कर सकता है।
- **उद्यमियों का निवेश**: उद्यमियों को कृषि सेक्टर में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करना मूल्यों को कम कर सकता है। उन्हें खेती उत्पाद को संसाधन से अधिक उपयोग करने के तरीकों का अधिक अध्ययन करना चाहिए।

5.3 आवश्यक सुधार:

- **पोस्ट–हार्वेस्ट प्रबंधन**: अच्छा पोस्ट–हार्वेस्ट प्रबंधन खेती उत्पाद के वितरण में नुकसान को कम कर सकता है, जिससे मूल्यों को कम किया जा सकता है।
- **सांवादिक संगठन**: किसानों के बीच सांवादिक संगठन को प्रोत्साहित करना और

उन्हें उनके हितों की रक्षा के लिए साझा आवाज बनाने में मदद कर सकता है।

- **तकनीकी उन्नतिः** नवाचारी खेती तकनीकों का उपयोग करके उत्पादकता बढ़ाने में सहायक हो सकता है, जिससे मूल्यों को कम किया जा सकता है।

कृषि बाजार में मूल्य नियंत्रण को बदलने के लिए ये उपाय सरकार, किसान, और उद्यमियों के संयोजन से आपसी सहमति और सहयोग के साथ अमल में लाए जा सकते हैं। इससे कृषि सेक्टर में सुधार हो सकता है और किसानों और उपभोक्ताओं को बेहतर मूल्य मिल सकता है।

6. निष्कर्ष

कृषि बाजार में मूल्य नियंत्रण एक महत्वपूर्ण और विवादित मुद्दा है, और यह आर्थिक विकास और किसानों की आर्थिक स्थिति पर सीधा प्रभाव डाल सकता है। इस लेख में, हमने सकारात्मक और नकारात्मक पहल के प्रति विचार किया है और देखा कि दोनों के पास अपने–अपने फायदे और हानियां हैं। सकारात्मक पहलों की ओर से, कृषि बाजार में मूल्य नियंत्रण किसानों की सुरक्षा को बढ़ावा देता है। यह उन्हें न्यूनतम मूल्य पर उनके उत्पादों को बेचने का अधिकार देता है और उनके आय को सुनिश्चित करता है। किसानों के लिए इसका मतलब है कि उन्हें अपने खेतों में अधिक निवेश करने का साहस मिलता है, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है। सकारात्मक पहलों के बिना, किसानों को अक्सर अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है, और उन्हें अपने उत्पादों की बिक्री के लिए अधिक निर्भर होना पड़ता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं होती है। इसके अलावा, सकारात्मक मूल्य नियंत्रण आर्थिक साक्षरता को बढ़ावा देता है। यह कृषि उत्पादों के वितरण में स्थिरता पैदा करता है और उन्हें अधिक लाभकारी बनाता है।

किसानों के साथ–साथ, यह उपभोक्ताओं को भी लाभ पहुंचाता है क्योंकि वे उत्पादों को सस्ते दरों पर प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि, नकारात्मक पहलों की ओर से, मूल्य नियंत्रण किसानों की प्रेरणा को कम कर सकता है। यह किसानों को अपने उत्पादों की गुणवत्ता और प्रादेशिक विशेषताओं के आधार पर निर्धारित मूल्यों के साथ काम करने की आवश्यकता नहीं होती है, जिससे उत्पादकता में कमी हो सकती है।

नकारात्मक पहलों के बिना, किसानों को अपने उत्पादों की बिक्री के लिए अधिक अटूट बाजार में प्रतिस्थापित होना पड़ता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। इसके अलावा, नकारात्मक मूल्य नियंत्रण बाजार में गुणवत्ता की कमी को बढ़ावा देता है, क्योंकि यह उत्पादकों को अपने उत्पादों को जल्दी और सस्ते दरों पर बेचने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसके परिणामस्वरूप, उत्पादक उत्पादों की गुणवत्ता कम कर सकते हैं और उन्हें अधिक संघटित बाजार में सबसे बड़े खरीददारों के साथ प्रतिस्थापित होना पड़ सकता है।

सारंश के रूप में, कृषि बाजार में मूल्य नियंत्रण के सकारात्मक और नकारात्मक पहल दोनों के पास अपने फायदे और हानियां हैं। सकारात्मक पहल किसानों की सुरक्षा और आर्थिक साक्षरता को बढ़ावा देते हैं, जबकि नकारात्मक पहलों के बिना उत्पादकता में कमी और गुणवत्ता में कमी हो सकती है।

किसानों के साथ–साथ, हमें एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो किसानों की सुरक्षा और उत्पादकता दोनों को मदद कर सकता है, और इसके साथ ही बाजार में स्थिरता और गुणवत्ता को बनाए रखने का सही तरीका है।

कृषि बाजार में मूल्य नियंत्रण के लिए सकारात्मक और नकारात्मक पहल का यह विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि हमें एक बालंस की आवश्यकता है, जिससे किसानों की आर्थिक सुरक्षा को साधना संभव हो सके और बाजार में उत्पादकता और गुणवत्ता का साथ दिया जा सके।